ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–04
दिनांक– मंगलवार, 13 जनवरी, 2026

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 17.6 एवं 4.7 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 99.0 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 71.0 प्रतिशत, हवा की औसत गति 11.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 1.0 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 3.1 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 12.0 एवं दोपहर में 18.9 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(14–18 जनवरी, 2026)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 14–18 जनवरी, 2026 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ रहने की सम्भावना है। इस दौरान मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। रात्री एवं सुबह में हल्की से मध्यम कुहासा छा सकता है। दिन में मौसम साफ रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमान की अवधि में दिन तथा रात के तापमान में बढ़ोत्तरी हो सकती है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 21 से 22 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 8 से 10 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में पछिया हवा चलने का अनुमान है। औसतन 6–8 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 35 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- विलम्ब से बोई गई गेहूँ की फसल जो 30–35 दिन की हो चुकी हो, उसमें सिंचाई के बाद यदि चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार (जैसे बथुआ) अधिक हों, तो 2,4–डी सोडियम लवण 1 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। यदि खेत में संकरी पत्ती वाले खरपतवार जैसे वन गेहूँ एवं जंगली जई का प्रकोप हो, तो क्लोडिनोफॉप (टॉपिक या झटका) 60 ग्राम सक्रिय तत्व को 400 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- सब्जियों में समय–समय पर निकाई–गुड़ाई करें तथा आवश्यकता अनुसार सिंचाई करें। पिछात फूलगोभी एवं बंदागोभी की फसल में डायमंड बैक मॉथ की नियमित निगरानी करें। इस कीट का पिल्लू सलेटी–भूरे रंग का होता है, जिसके शरीर पर छोटे–छोटे बाल होते हैं। यह पत्तियों को खाकर उनमें छोटे छेद बना देता है, जिससे पौधों की वृद्धि रुक जाती है और शीर्ष छोटा बनता है, परिणामस्वरूप भारी नुकसान होता है। नियंत्रण हेतु प्रकाश प्रपंच लगाएँ। अधिक प्रकोप की स्थिति में स्पिनोसैड 1 मिली प्रति 3 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- सरसों की फसल में लाही कीट की नियमित निगरानी करें। यह सूक्ष्म कीट पौधों के कोमल भागों, जैसे तना और फलियों का रस चूसता है। कीट के मधु–स्त्राव से फंगस का प्रकोप हो जाता है, जिससे पौधों पर काले धब्बे दिखाई देते हैं। इससे शाखाएँ कम लगती हैं, पौधों की बढ़वार रुक जाती है और फलियों की संख्या तथा तेल की मात्रा घट जाती है। बचाव हेतु डाइमेथोएट 30 ईसी 1.0 मिली प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- चना की फसल में सूंडी कीट की निगरानी करें। यह कीट फलियों में छेद कर अंदर प्रवेश कर जाता है और दानों को खाकर खोखला कर देता है, जिससे उपज में भारी कमी आती है। दिन के समय यह कीट आधा फली में घुसा और आधा बाहर लटका हुआ दिखाई देता है। नियंत्रण के लिए खेत के पास प्रकाश प्रपंच लगाकर प्रौढ़ कीटों को नष्ट करें। इसके अलावा 3–4 फेरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ की दर से लगाएँ। अधिक प्रकोप होने पर स्पिनोसैड 1 मिली प्रति 3 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- मक्का में तना छेदक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडियाँ कोमल पत्तियाँ खाती हैं और मध्य कलिका से होकर तने में प्रवेश कर गूदे को खाती हुई जड़ की ओर सुरंग बना लेती हैं। इससे मध्य कलिका मुरझाकर बाद में सूख जाती है। एक पौधे में कई सूंडियाँ मिलकर भारी नुकसान पहुँचाती हैं। नियंत्रण हेतु फोरेट 10 जी या कार्बोफ्यूरान 3 जी के 7दृ8 दाने प्रति गाभा दें। अधिक नुकसान होने पर डेल्टामेथ्रिन 250–300 मिली दवा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें।
- टमाटर में फल छेदक कीट की निगरानी आवश्यक है। इसके पिल्लू कच्चे एवं पके फलों में छेद कर अंदर का गूदा खाते हैं, जिससे सड़न शुरू हो जाती है और उत्पादन में भारी कमी आती है। नियंत्रण के लिए 8दृ10 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर लगाएँ। ब्यूवेरिया बेसियाना जैविक कीटनाशी 1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। अधिक प्रकोप की स्थिति में इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी 1 मिली प्रति 2.5 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- पशुपालक भाई दूधारू पशुओं का विशेष ध्यान रखें। इस मौसम में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए हरे एवं सूखे चारे के साथ प्रतिदिन 50 ग्राम नमक, 50–100 ग्राम खनिज मिश्रण तथा संतुलित दाना खिलाएँ। पशुओं को नियमित रूप से कैल्शियम की सूई दिलवाएँ अथवा तरल कैल्शियम दाने में मिलाकर दें।

आज का अधिकतम तापमानः 22.8 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.9 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 5.5 डग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.5 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी